मत्सेन्द्र की झोली

श्री गणेशाय नमः

श्री स्वामी समर्थाय नमः

सद्गुरु स्वामी राजने कथ सुनाया।
सुनके भगत फुला न समया।
मत्सेन्द्र पीर ने फेके पासे।
देख के गोरख भरपूर हासे।।१।।
गोरख कहे मत्सेन्द्र दादा।
छोड दे सारी माया की मर्यादा।
मत्सेन्द्र खोले भगवी झोली।
जिसमें समायी चमत्कार की डोली।।२।।
निकले उसमे चौदाह रतन।
दीन भगत को करावे मगन।
सुरई खरपर तांबे का चिमटा।
कोमल वटांकुर पाँचबच्चों की हल्दी और संजीवन बुटी।।३।।
नौ रत्नों की अंगुठी कामधेनु की प्रतिमा।
तथा मोरपंखो का चँवर।
सोने का घडा व्याघ्रचर्म का आसन।
रक्तचंदन की खटावा।।४।।
रक्षा की ढाल तथा मोहक।
द्रव्य से भरी हुई चिलीम।
हाथ डालके डोली में
निकाले अष्टधातू करी सूरई।।५।।
ग्यानरुपी सागर की शक्ति उसमें समायी।
मन्थन कर के अग्यान मे मथाया।

शाबररुपी अमिरस से जगत को झुलाया।।६।।
मिट्टी का खपर होवे दुसरा रतन।
ग्यान की दिक्षा लेके अग्यान का करे धावन।
संसाररुपी माया में दिखावे चमत्काररुपी दिया।
अघोरी को सदा झाडे शिवरुपी माया।।७।।
तिसरा रतन होवे तांबे का चिमटा।
बजा के बुरी नजर चित् को झट से सांडा।
तांडव कराके बजावे चटचट।
खोले भाग्य का ताला खुश करावे झटपट।।८।।
चौथा रतन होवे कोमल वटांकुर।
बोवे बीजशक्ती का करावे प्राणांकुर।
अष्टम से प्रदोष तक गो दुग्ध सेवे।
बाँज को चुटकी में सुख का फल देवे।।९।।
अमोल हुवा सुंदर पाँचवा रतन।
पाँच बच्चों की हल्दी से मन को करे भावन।
कायारुपी गुहा में जरारुपी शेर।
तोड के मंजिर जादू टोना की करावे उसे ढेर।।१०।।
छटा रतन होवे सुनेहरा।
कहे संजीवनरुप बुटीका मोहरा।
अनमोलरुपी पारस बल उसमें समाया।
लोह को करे सोन ऐसी
दिखावे किमया।।११।।
सातवा रतन होवे नौ रत्नों की बाली।
वही होवे सारे ब्रह्मांड का वाली।
नौ ग्रहों की ताकद उसमें मिलाई।

तारका नक्षत्र के बल की देवे मिठाई।।१२।।
आठवा रतन होवे सुंदर कामधेनु की प्रतिमा।
सब कारज को पार करे यही उसकी महिमा।।१३।।
उदर में वास करे तेहतीस करोड भगवान।
सब कामना को पूरन करे यही भगत का अरमान।
नौवा रतन होवे सुंदर मोरपंखी का चँवर।
झटकावे बुरी साया बुझावे माया भवर।।१४।।
अवलिया शक्ती देवे अघोरी को टक्कर।
कुविद्या बुद्धी को जलसे देवे चक्कर।।१५।।
दसवा रतन होवे सोने का घडा।
दुर्भाग्य आगमन को जल्द से देवे तिडा।
घडे ने कराया भाग्य का बोलबाला।
मशहूर कर के बने नसीब का रखवाला।।१६।।
ग्यारहवा रतना होवे व्याघ्रचर्म का आसन।
योगी को घुमावे बैठा के पद्मासन।
पार करे विश्व के सातों आरमान।
भक्ती को चुसावे यही शिवशक्ती का परमान।।१७।।
रक्तचंदन की खटवा होवे बारहवा रतन।
माया में चला के फुलावे सुख का चमन।
तैरावे भगत को सातों समंदर।
झुलाके याचक को बनावे जोगिंदर।।१८।।
तेरहवा रतन रक्षण करावे ढाल कवच।
दारिद्रऋण की बौछाड से बुझावे यही भगत का अरच।
मिलन करावे सुख काबहान।
सलामत रहे जन्नत का पाडाव।।१९।।

सुंदर चिलीम होवे चौदहाव रतन।
द्रव्य से भरी हुई संचारे गगन।
झुरका मार के मारे फुंकर।
वही कठिनाई को बनाई सुकर।।२०।।
ऐसे होवे मच्छिंद्र की झोली।
याद करने से बुझावे दुःख की टोली।
उसमें है अनमोल भक्ति का खजाना।
भावरुपी जागर से भगत की करे धारण।।२१।।
गोरख कहे मेरा गुरु महान।
चमत्कार कराके फुलावे सारा जहान।
सद्गुरु स्वामी तू ही ब्रह्मांडनायक।
दीन भगत को सिद्धी देवे सारे जगत का विनायक।।२२।।
ॐ स्वामी। ॐ स्वामी।ॐ स्वामी